Date

B.A (Hons) part I

Subject - HISTORY

Dr Deepak kumar Rajak

Assistant professor (Guest)

Deptt of History

S.R.A.P college, Chakiya

Date :- 02.02.2022

प्राचीन भारत में स्थापत्य के क्षेत्र में द्रविड़ शैली का विकास :-

भौगोलिक दृष्टि से द्रविड़ शैली का क्षेत्र कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक है। स्थापत्य की द्रविड़ शैली का आधार पल्लव ~~काल~~ कला ने तैयार किया।

पल्लव कला :- पल्लव शासकों ने पहाड़ों को काटकर मंदिरों का निर्माण आरंभ किया। पल्लवों के अधीन दो प्रकार के मंदिर देखने को मिलते हैं :- (1) पहाड़ों को काटकर बनाए गए मंदिर तथा (2) इमारती मंदिर

पहाड़ों को काटकर बनाए गए मंदिर का उदाहरण महेन्द्रवर्मन शैली तथा नरसिंह वर्मन शैली के मण्डपशैली की प्रधानता है। मण्डप से आशय है स्तम्भों पर टिका हुआ एक हॉल जो गर्भगृह के सामने निर्मित किया जाता था जिसमें संगीत, नृत्य, संकीर्तन तथा अन्य प्रकार के अनुष्ठान किए जा सकते थे।

आगे नरसिंहवर्मन शैली में रथ प्रकार के मंदिर बनाए गए हालांकि मण्डप प्रकार के भी मंदिर बनाए जाते रहे किन्तु आगे चलकर रथ प्रकार के मंदिरों की प्रधानता महाबलीपुरम में कुल 8 रथों का निर्माण किया गया जिनमें सबसे बड़ा रथ युधिष्ठिर रथ है तथा सबसे छोटा रथ द्रौपदी रथ है। आगे पहली बार राजसिंह शैली में स्वतंत्र रूप

से मंदिरों का निर्माण किया जाने लगा। पल्लव कला में स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर का पहला उदाहरण महाबलीपुरम का तटीय मंदिर है। द्रविड़ स्थापत्य की आरंभिक विशेषताएं इस मंदिर में नजर आती है। उदाहरण के लिए:-

- शिखर का निर्माण
- विमान का निर्माण
- स्तम्भों का निर्माण
- मंडप का निर्माण। यह तटीय

मंदिर द्रविड़ शिखर का आरंभिक उदाहरणों में एक है। द्रविड़ शैली के शिखर खंडीय शिखर होते है, जो नीचे से ऊपर तक पिरामिड के रूप में निर्मित होते है।

Date
[redacted]

B.A (Hons) part III
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of HISTORY
S.R.A.P College, chakiya
Date - [redacted] 02.02.2022

सल्तनत कालीन स्थापत्य

भारत में स्थापत्य की प्राविधन शैली (शहतीरी शैली) प्रचलित थी। इस शैली की विशेषता होती थी स्थापत्य में स्तम्भ एवं शहतीर का प्रयोग। वहीं दूसरी तरफ भारत में तुर्की लोग मेहराबी शैली (अरकुएट शैली) लेकर आए थे अरकुएट शैली के अंतर्गत मेहराब एवं गुम्बद का उपयोग होता है। यह शैली बिजेन्टियायी शैली से ली गई थी। चूंकि इस प्रकार के स्थापत्य में स्तम्भों का प्रयोग नहीं होता है इसलिए मजबूती देने के लिए गारे (Mortar) के रूप में चूना तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया।

आरंभिक स्थापत्य

जब भारत में तुर्कों का आगमन हुआ तो आरंभ में उनके पास नए प्रकार के स्थापत्य का वक्त नहीं था इसलिए उन्होंने भारत में कुछ प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में ढाल लिया। उदाहरण के लिए - कुतुबुद्दीन ऐबक ने - दिल्ली में कुव्वातुल इस्लाम मस्जिद, अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया।

इल्बरी वंश के स्थापत्य

किन्तु भारत में स्थापित होने के पश्चात उन्होंने स्वतंत्र रूप में स्थापत्यों का निर्माण आरंभ किया चूंकि उन्होंने इस्लामी स्थापत्य के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया। अतः भारतीय स्थापत्य की शैली से मुस्लिम

स्थापत्य का प्रभावित होना बहुत ही स्वाभाविक था।
फिर आगे विभिन्न वंशों के अधीन मेहराबी शैली
तथा शहतीरी शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य होता रहा
तथा फिर इस सामंजस्य के परिणामस्वरूप एक स्वतंत्र
भारतीय शैली का विकास हुआ।

गुलामी वंश के अधीन इल्तुतमिश
के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरंभ किया गया। उसने
के लिए उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा स्थापित
कुतुब मीनार के कार्य को पूरा कराया फिर उसने अपने
बेटे राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान-ए-गारी
का निर्माण कराया। आगे बलबन का मकबरा को
एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का दर्जा दिया जाता है तथा यह
बताया जाता है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैज्ञानिक
प्रकार के गुम्बद का विकास हुआ। किन्तु नवीन शोधों
से यह स्थापित होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा
निर्मित अलाई दरवाजा प्रथम वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब
तथा गुम्बद का उदाहरण है।

चित्र

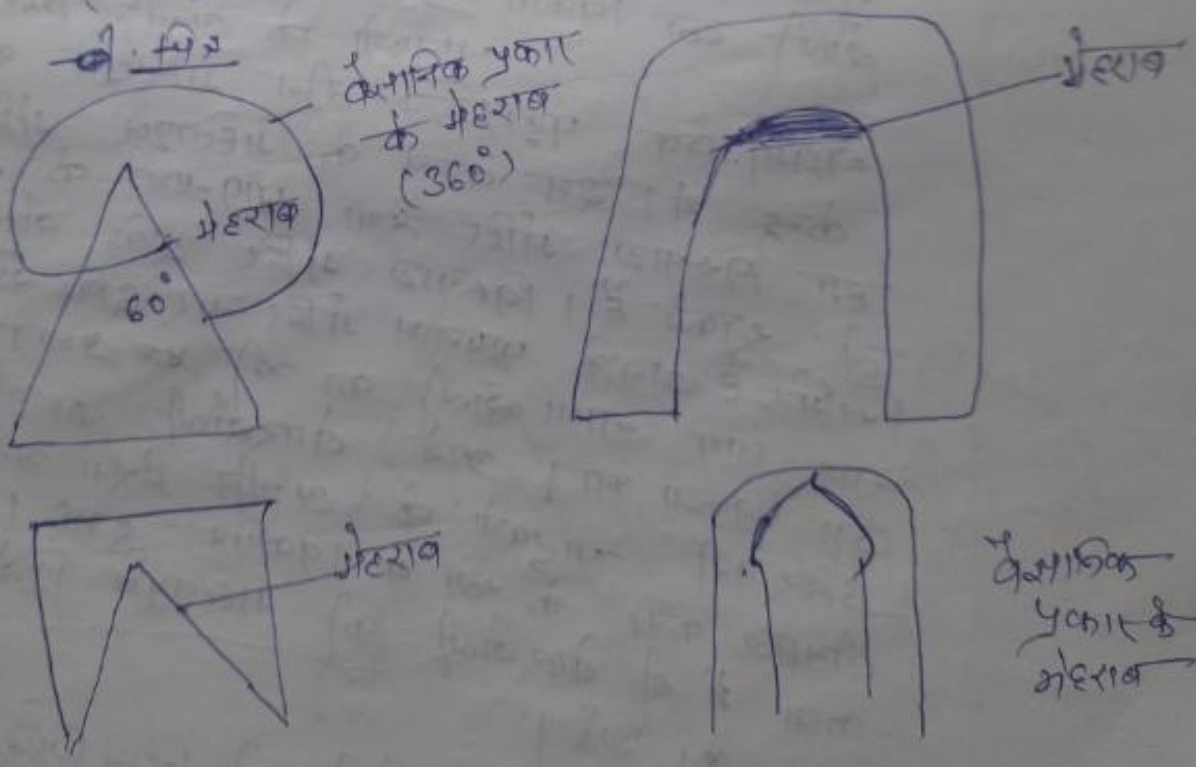

Date :- 30.1.2022
B.A (Hons)

Dr. Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.P. College

इतिहास के अध्ययन में मार्क्सवाद की भूमिका।

- मार्क्स ने पूँजीवाद पर आनुद्दिक हमला किया। उसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया देखिए जिसे आप पूँजीवाद कहते हो या सामंतवाद कहते हो वह महज एक उत्पादन की प्रणाली नहीं है वह एक राजनीतिक, समाजिक पद्धति है, वह एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है तब उसने एक इतिहास की व्याख्या की। उसका term था द्वन्दात्मक भौतिकवाद।

एन्टोनियो ग्राम्सी (इटली) - मार्क्स के सिद्धांत को परिवर्तित किया

- मार्क्स, मैक्स वेबर, मैक्स मूलर - एशिया कि कभी यात्रा नहीं की
- न्यूयार्क ट्रिब्युन - 1853 में मार्क्स ने न्यूयार्क में लिखा 1858 - में उसने 1857 के विद्रोह से प्रभावित होकर भारत के बारे में लिखा।

एशियाई उत्पादन प्रणाली - एशिया में तो ऊपर निरंकुश राजतंत्र है और नीचे प्रारंभिक समाजवाद है प्राच्य निरंकुश (निरंकुश शासक के सदर्भ में यह अवधारणा उभर कर आया। यह term पहले J. S. मिल के द्वारा दिया गया था Oriental despotism शब्द दिया।

और जो निरंकुश शासक है वह अपनी नौकरशाही और सिंचाई व्यवस्था पर नियंत्रण रखता है और अधिकांश चीजों पर कर के रूप में ले लेता है और थोड़ा सा भाग जो बच जाता है उस पर किसान अपना गुजर बसर करते है और इस तरह से यह व्यवस्था सैकड़ों वर्षो से चलती आ रही है भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है. उसमें परिवर्तन के गुण नहीं है अगर भारतीय समाज में परिवर्तन होता है तो कोई बाहरी तत्व के कारण ही होता है। उसका मानना है कि भारतीय समाज में परिवर्तन होगा तो ब्रिटिश हुकुमत अनजाने ही परिवर्तन ला देगा। वह

ब्रिटिश साम्राज्यवादीयों का पक्ष नहीं ले रहा है लेकिन कहीं न कहीं उसमे भी युरोपीय अहंकार आ ही चुका है

- मार्क्सवादी इतिहासलेखन कार्ल मार्क्स का अनुसार नहीं है. क्योंकी जो भारतीय मार्क्सवादी है वह कार्ल मार्क्स के विरोध मे लिखा है. मार्क्स और भारतीय मार्क्सवाद एक नहीं है दोनों मे यही फर्क है जो लाइन एक लाली मे है

- उसने कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक सिद्धांत को तो लिया लेकिन उसके एशिया उत्पादन प्रणाली के सिद्धांत को सबसे अधिक challenge मार्क्सवादी विद्वानों ने किया है। उसने कहा कि हम इस बात को नहीं मानते कि भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है. ~~भारत~~ भारत मे भी अर्थव्यवस्था मे परिवर्तन होता है अर्थव्यवस्था मे होने वाले परिवर्तन के साथ राजनीति मे, समाज मे, एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है, सबसे पहले D.D. कौशाम्बी, B.N दत्ता ये दो मार्क्सवादी विद्वान, जिन्होंने प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन किया और उन्होंने यह मान्यता रखी आगे R.S. Sharma, D.N. Jha, V.N. Yadav है ये मार्क्सवादी परम्परा के विद्वान के रूप मे उभरे। मध्यकालीन इतिहास मे सबसे पहले मो० हबीब (अलीगढ़ विश्वविद्यालय मे इतिहास के विभागाध्यक्ष थे) ने 1952 मे "महमूद ऑफ गजनी" लिखकर सबसे पहले मार्क्सवादी इतिहास लेखन की नींव डाली। फिर इसके बाद इरफान हबीब भी मार्क्सवादी विद्वान रहे है। आधुनिक भारत के इतिहास मे रजनी पाम दत्त, ए० आर० देसाई, एम० एन० राय

ये सब मार्क्सवादी इतिहास लेखन के रूप में काम किया लेकिन ये सब पहली पीढ़ी के लेखक है इनके लेखन मे थोड़ी सी त्रुटि रही है जिसको कुछ हद तक सुधारा है विपीन चन्द्र, आदित्या मुखर्जी मृदुला मुखर्जी

[जहाँ तक सीमाओं की बात है तो कोई भी विचार धारा अपने आप मे पूर्ण नहीं होती, न कोई व्यक्ति पूर्ण होता है और न संस्था पूर्ण होती है सबकी अपनी सीमा है]

लेकिन यह मान लेना कि मार्क्सवादी इतिहास ने भारतीय इतिहास का अपकार किया है यह मान लेना बिल्कुल गलत है

मार्क्सवादी इतिहास लेखन के उद्भव से पहले राजवंश का इतिहास लिखा जाता था। राजाओं के बारे मे उनके युद्ध के बारे मे, उनके घटना क्रम के बारे मे इतिहास मे तारीखे महत्वपूर्ण होती थी।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने सबसे पहला काम यह किया उसने कहा कि देखो इतिहास मे परिवर्तन महत्वपूर्ण है परिवर्तन कि जड उन्होंने आर्थिक परिवर्तन मे खोजा। उन्होने कहा कि जब आर्थिक परिवर्तन होता है तो राज० समाज एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है। पहले तो उन्होने इतिहास के अध्ययन मे अर्थव्यवस्था और समाज को रखा। इससे पहले अर्थव्यवस्था और समाज की चर्चा बहुत कम होती थी।

→ राष्ट्रवादी विद्वान ने भारतीय समाज का आदर्श रूप प्रस्तुत किया लेखने

- मार्क्सवादी विद्वाने ने पूर्व मध्य काल का Concept लाया। परन्तु उनकी सीमा क्या थी? उनकी सीमा यह थी की हर कुछ को आर्थिक कारणो से देखते

NOVEMBER 2021					
Sun		7	14	21	28
Mon	1	8	15	22	29
Tue	2	9	16	23	30
Wed	3	10	17	24	
Thu	4	11	18	25	
Fri	5	12	19	26	
Sat	6	13	20	27	

DECEMBER 2021					
Sun		5	12	19	26
Mon		6	13	20	27
Tue		7	14	21	28
Wed	1	8	15	22	29
Thu	2	9	16	23	30
Fri	3	10	17	24	31
Sat	4	11	18	25	

17 January MONDAY

017-348 4TH WEEK '22

गुप्तों ने राष्ट्रवाद की उत्पत्ति नहीं की बल्कि
राष्ट्रवादियों ने गुप्तों की उत्पत्ति की। डी॰डी॰ कौशाम्बी,
वहीं डी॰डी॰ कौशाम्बी कहते हैं कि अजन्ता, बाघ, एलोरा
के दशावतार मंदिर, आर्यभट्ट, वराहमिहिर इन तमाम
लोगों की उपलब्धियों के पीछे छोटे और पीसते
हुए के लोग थे जिनके गीत गाने वाले कोई
वत्सभट्टी, वासुल, या हरिषेण नहीं था।
उनका कहना है कि कला और साहित्य समाज
के उच्च वर्ग की [illegible] प्रतिनिधित्व कर रहा है गरीबों
की पीड़ा का अंकन नहीं कर रहा है।
→ बुद्ध काल का अध्ययन किया तो द्वितीय नगरीकरण
का पूरा श्रेय लोहे को दे दिया
→ मौर्य काल का अध्ययन किया तो अध्ययन का
पूरा श्रेय अति केन्द्रीयकरण को दे दिया।
इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एक नया
School of Historiography आया जिसे कहते हैं
संशोधनवादी इतिहास लेखन, लेकिन संशोधनवादी
इतिहास लेखन ने आंशिक रूप से मार्क्सवादियों
का संशोधन किया पूरी तरह खारिज नहीं किया।

08.00 09.00 10.00 11.00 12 13.00 14.00 15.00 16.00 17.00 18.00

Notes

Date :- 31.01.2022
B.A part (Hons) - I
Subject - History
Dr Deepak kumar Rajak
Assistant professor
S.R.A.P College

FEBRUARY 2022
Sun 6 13 20 27
Mon 7 14 21 28
Tue 1 8 15 22
Wed 2 9 16 23
Thu 3 10 17 24
Fri 4 11 18 25
Sat 5 12 19 26
18 January '22 018-347 4TH WEEK TUESDAY

क्या है महायान बौद्ध पंथ एवं बोधिसत्व।

महायान बौद्ध धर्म में बुद्ध चले गए हाशिए पर और एक नया Concept आ गए वह था बोधिसत्व।
बोधिसत्व का एक मतलब आता है निःस्वार्थ सेवा
निस्वार्थ सेवा से मतलब यह है जैसे बुद्धा के बारे में कहा गया कि कुछ भी हो बुद्धा तो थोड़ा स्वार्थी ही थे स्वयं निर्वाण के रास्ते पर चले गए और हमलोगों को स्वयं भटकने के लिए छोड़ गए
बोधिसत्व वह है
जो निर्वाण प्राप्त करने की योग्यता रखता हो जिसने निर्वाण प्राप्त नहीं किया है क्यों... किया है, तो उसका कहना है कि जब तक इस संसार... एक-एक प्राणी को निर्वाण नहीं दिलवा देते तो हम खुद निर्वाण के रास्ते पर नहीं जाएंगे
Transfer of Merit (That's belive in Transfer of
→ बोधिसत्व एक मानव नहीं है यह एक परिकल्पना
— एक है जो आपके लिए कर रहा है यह धारणा ...
— ... में फैलती चली गयी। अब लोगों में बोधिसत्व के लिए श्रद्धा आनी शुरू हुई और श्रद्धा से निकली... तो बोधिसत्व की भक्ति होने लगी। और भक्ति से जुड़ गये मूर्तिपूजा। अब बोधिसत्व की मूर्ति ... लगी बाद में बुद्ध और बोधिसत्व दोनों ... हो गया। लोगों चलका दोनों की मूर्तियाँ बनने ... बोधिसत्व में ... प्रमुख देवता हो अवलोकितेश्वर है
परम प्राणी हितैषिता।
... व्यापारी वर्ग है चूँकि उस समय Trade और ... का व्यापक विस्तार हुआ है तो ... Trade॥

19 January WEDNESDAY 019-346 4TH WEEK '22

के कारण एक बड़ा सम्पन्न वर्ग और भूमि अनुदान के कारण एक बहुत बड़ा चारणक कुलीन वर्ग जो स्थापित है उनके पास धन है लेकिन वस्तु नहीं है क्योंकि व्यापारी के पास वस्तु है तो धन नहीं है तो व्यापारियों के नाम पर वह बौद्ध धर्म को बड़ी मात्रा में आर्थिक अनुदान देने लगी।

- धर्म के क्षेत्र मे लोक तत्व अधिक महत्वपूर्ण हो गया।

- जैन पंथ मे भी ईसा के आरंभिक सदी मे श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय मे विभाजन हो चुका था दिगम्बर साधू कर्नाटक क्षेत्र को आधार बना लिया। गुजरात मे श्वेताम्बर साधूओं का विशेष वर्चस्व स्थापित हुआ।

→ जैसे-2 जीवन की आवश्यकताऐं बदलती है तो देवताओं एवं धर्म का Concept भी बदलता चलता है।

→ Note

आरंभिक या पुराना ब्राह्मण पंथ का आधार वेद था तो नव ब्राह्मण पंथ जिसमे भक्ति, अवतारवाद मूर्तिपूजा है तो इसका मौलिक आधार पुराण है वेद और पुराण मे क्या अंतर है
वेद मे धर्म का अभिजात्य रूप आया है और पुराण में धर्म का लोक रूप आया है जिसको तथाकथित Hinduism का आरंभिक रूप कहते हो पुराणों मे आया है भक्ति, अवतारवाद मूर्तिपूजा जैसे चीज पुराणों मे आई है

Date :- 4.02.2022
B.A part - I
Subject - History
Dr Deepak Kumar Rajak
S.R.A.P. College

24 January MONDAY

गुजराल डॉक्ट्रिन एवं कौटिल्य का राजमंडल

गुजराल डॉक्ट्रिन - I.K. गुजराल ने भारत के विदेश नीति मे एक डॉक्ट्रिन दी जिसे गुजराल डॉक्ट्रिन कहा जाता है।

गुजराल डॉक्ट्रिन मे उनका यह कहना था कि पड़ोसियों के साथ जो अपने सम्बन्ध है वो पड़ोसियों के साथ अपने सम्बन्ध मे हमें ज्यादा देने के लिए तत्पर रहना चाहिए और उनसे कम उम्मीद हमें रखना चाहिए। इससे हमारे पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ होगें।

Q. गुजराल डॉक्ट्रिन बकवास है क्या यह कौटिल्य के राजमण्डल के सिद्धांत के विरुद्ध नहीं जाता है।

Ans :- कौटिल्य कहता है आपका पड़ोसी आवश्यक रूप से आपका शत्रु हो जाएगा क्योंकि आपके जो संसाधन है और उसके जो संसाधन है वह कॉमन हो जाते है जैसे है स्वरूप है प्राकृतिक सम्पदा, जल संसाधन है इस कारण से दोनों के मध्य संसाधनों के मुद्दे पर टकराव होगी इसलिए अपने ~~निकटस्थ~~ निकटस्थ पड़ोसी से सावधान रहिए। और गुजराल डॉक्टरिन कहता है कि अपने पड़ोसीयों के साथ मित्रता बनाइए।

Interpret :- कौटिल्य की राजव्यवस्था ईसा कि पाँचवी सदी की सच्चाई बताती है

JANUARY 2022

Sun	30	2	9	16	23
Mon	31	3	10	17	24
Tue		4	11	18	25
Wed		5	12	19	26
Thu		6	13	20	27
Fri		7	14	21	28
Sat	1	8	15	22	29

FEBRUARY 2022

Sun		6	13	20	27
Mon		7	14	21	28
Tue	1	8	15	22	
Wed	2	9	16	23	
Thu	3	10	17	24	
Fri	4	11	18	25	
Sat	5	12	19	26	

25 January '22 025-340 5TH WEEK TUESDAY

आज हम 21वी सदी मे है जब हम परमाणु हथियार
रासायनिक हथियार जैसे मारक हथियार आ चुके है।
08.00 आज हमारी दुनिया भूमण्डलीकृत हो चुकी है विश्व
व्यापारीकरण आ चुका है एकीकृत हो चुकी है आज
09.00 के संदर्भ मे गुजराल डॉक्ट्रीन ज्यादा सटीक है
क्योंकी ~~[illegible]~~ एक जुड़ रही दुनिया ट्रांसपोर्ट, कम्युनीकेशन
10.00 लाइन इन सब के विकास के लिए आपस मे पड़ोसीयों
के साथ बेहतर समन्वय आवश्यक होगें इसलिए अगर
11.00 कौटिल्य का अर्थशास्त्र तिसरी सदी इसा पूर्व की सच्चाई
बताता है तो गुजराल डॉक्ट्रीन 20 सदी के अंत की
12 था 21वी सदी की सच्चाई।

13.00

14.00

15.00

16.00

26 Wednesday

17.00

18.00

Notes

Date:- 04.02.2022
B.A (Hons)
Dr Deepak kumar Rajak
Assistant professor
S.R.A.P College

Critical Opinion

बांग्लादेश : जिन्ना का द्वि - राष्ट्र सिद्धांत त्रि - राष्ट्र सिद्धांत मे कैसे बदला ?

Bangladesh: How did Jinnah's two nation theory turn into a three-nation theory ?

Digram

राष्ट्र निर्माण (Nation - Building

↓

प्रतिनिध्यात्मक सरकार के साथ गहरा सम्बन्ध
(Association with Representative politics)

↓

बांग्लादेश का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मे उदय

Emergence of Bangladesh

↓ (1) संरचनात्मक कारक Structural Factor

↓ (2) पाकिस्तान का आंतरिक विरोधाभास (Internal Contradiction of pakistan)

↓ (3) आकस्मिक कारक (Contingent factor)

Explain :- इतिहास अतीत एंव वर्तमान के बीच संवाद का नाम है

History is a Communication between present and the past.

जब हम वर्तमान मे जी रहे होते है तो हमारे Bone मे इतिहास होता है हमें पता ही नही चलता ।

→ इतिहास मे कि गई किसी भी गलती को किमत चुकानी पड़ती है

↓

(a) अवाम बनाम कौम की अवधारणा
(b) क्षेत्रवाद बनाम इस्लाम

03 January MONDAY 003-362 2ND WEEK 22

NOVEMBER 2021 | DECEMBER 2021

- जब जो राष्ट्र बना है तो प्रतिनिध्यात्मक सरकार के साथ साथ बना है   Nation

Community

एक खास समूह के लोग राष्ट्र निर्माण करना चाहते है तो इनमें एक होने का भाव पैदा करना होगा

Sence.

इनमें एक होने का भाव पैदा करने के लिए इतिहास का हवाला दे सकते हो आप उनके एक common सांस्कृतिक पहचान की बात कर सकते हो। आप उनकी भाषायी या नस्लीय पहचान की बात कर सकते हो

लेकिन जब आप एक सांस्कृतिक पहचान (Cultural Homogenity) की बात करोगे तो आपको इस बात के लिए सावधान होना पड़ेगा की एक Group of people उससे अलग न हो

Nation बनने के साथ ही separation की प्रक्रिया शुरू होती है। आप क्योंकि नेशनलिज्म की बात करते हो तो यह ध्यान रखना होगा की इससे नस्लीय समूह के लोग आपस से कट न जाए।

- Note:- जब विभिन्न नस्लीय समूह के बीच balance बनाकर जब उसके एक होने का भाव पैदा करते हो कि हम एक है तो Process of Nation building होता है यह process पहले पश्चिमी यूरोप मे शुरू हुआ था तो उनका आकार छोटा था (2) उनमें Cultural एवं regional diversity नहीं था। जितना की Asio - African या बाकी - Country में देखा जाता। उन्होंने अपने यहाँ Nation building का काम शुरू किया और Successfully उन्हें क्रियान्वित भी किया।

Local self Gov Act – 1882 -

JANUARY 2022						
Sun	30	2	9	16	23	
Mon	31	3	10	17	24	
Tue		4	11	18	25	
Wed		5	12	19	26	
Thu		6	13	20	27	
Fri		7	14	21	28	
Sat	1	8	15	22	29	

FEBRUARY 2022					
Sun		6	13	20	27
Mon		7	14	21	28
Tue	1	8	15	22	
Wed	2	9	16	23	
Thu	3	10	17	24	
Fri	4	11	18	25	
Sat	5	12	19	26	

January 04
'22 004-361 2ND WEEK TUESDAY

फिर आगे अमेरिकी क्रांति एवं फ्रांस की क्रांति के समय प्रजातांत्रिक विचार भी आया। अब इन प० यूरोप के देशों ने एक समझदारी भी दिखाई वह थी Civic Nationlism)
Civic Nationlism में आपकी Identity के आधार पर नहीं बल्कि democratic process के आधार पर विभिन्न एथनिक समूह को जोड़ा जाता है।
· Nation building की process को Asio-Africa देशों में चला उसने बड़ी संख्या में Refugee को पैदा किया। सभी Asio-African देश Civil war के शिकार हो चुका गये हैं

Digram:- (1) संरचनात्मक कारक (बांग्लादेश)
↓
द्वि राष्ट्र सिद्धांत की विफलता
(Failure of two Nation theory)
Muslim ↓ brotherhood vs Muslim Community)
(a) उम्मा बनाम कौम की अवधारणा (सर सैयद अहमद खाँ)
(b) क्षेत्रवाद बनाम इस्लाम (Regionalism vs Islam)
(c) जातिवाद, जनजातिवाद बनाम इस्लाम

इस्लाम की प्रकृति:
- साम्यवाद जिस तरह विश्व सरकार की बात करता था। उसी तरह इस्लाम भी Global system की बात करता · वह था दार-उल-हर्ब को दार-उल-इस्लाम बनाना। पूरी दुनिया में हमें मूर्ति पूजा को समाप्त करके इस्लाम के शासन को फैलाना है इस्लामिक पद्धति को फैलाना है, इस्लामी समाज की ~~फैलाना है~~ स्थापना करनी है। कभी भी इस्लाम